Samjhane Ka Tariqa (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 241
Weekly Booklet : 241

अमीरे अहले सुन्नत के "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना" के
बेक टाइटल पर आने वाले मज़ामीन का मज्मूआ

समझाने का त़रीक़ा

सफ़हात 23

अनमोल दौलत 04
फ़ुज़ूल सुवालात के आ़दी 12
औलाद को येह भी सिखाइये 08
नमाज़ी बढ़ाने के नुस्ख़े 14

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **समझाने का त़रीक़ा**
सिने त़बाअ़त : **1443** हि., **2022** ई.
ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

समझाने का त़रीक़ा

येह रिसाला (**समझाने का त़रीक़ा**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई मेल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद1, गुजरात

MO. 9898732611 • Email :hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

समझाने का त़रीक़ा

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 23 सफ़्हात का रिसाला : **"समझाने का त़रीक़ा"** पढ़ या सुन ले उसे हर काम शरीअ़तो सुन्नत के मुत़ाबिक़ करने की सआ़दत इ़नायत फ़रमा कर बे ह़िसाब बख़्श दे ।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे । (ترمذی، 2/27، حدیث:484)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

समझाने के बा'ज़ मुअस्सिर त़रीक़े

ह़ज़रते बीबी उम्मे दरदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا फ़रमाती हैं : "जिस ने अपने भाई को चुपके से समझाया तो उस ने उसे ज़ीनत बख़्शी और जिस ने उसे अ़लानिया और लोगों के सामने समझाया तो उस ने अपने भाई को ऐ़ब लगाया ।" (شعب الایمان، 6/112، حدیث:7641)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! समझाना भी एक फ़न है, **अल्लाह** करे येह हम को आ जाए, अगर शर्ई ए'तिबार से किसी को समझाना आप पर ज़रूरी हो और आप इस के अह्ल भी हों तो बड़ों को एह़तिराम से और छोटों को शफ़्क़त के साथ समझाइये । जारिह़ाना अन्दाज़ में या डांट कर

अगर समझाएंगे तो हो सकता है कि सामने वाला चुप हो जाए लेकिन दिली त़ौर पर अपनी इस्लाह़ करने के लिये तय्यार न हो। बारहा लोगों का समझाने का अन्दाज़ रफ़ और जारिह़ाना होता है जिस की वज्ह से सामने वाला समझ नहीं पाता और बा'ज़ अवक़ात वोह बिदक जाता है। बिल ख़ुसूस सोशल मीडिया पर जिस जारिह़िय्यत के साथ लोग एक दूसरे को समझा रहे होते हैं, इस से सामने वाले के अन्दर ज़िद ही पैदा होती होगी, भले वोह ग़लती पर हो और उस का ज़मीर भी तस्लीम कर रहा हो कि मैं ग़लती पर हूं मगर वोह ऐसे मुस्लेह़ (या'नी इस्लाह़ करने वाले) की बात कभी क़बूल नहीं करेगा और सोचेगा कि अगर अपनी ग़लती क़बूल करूंगा तो हो सकता है सामने वाला मुझ पर मज़ीद चढ़ाई कर दे, इस लिये वोह अपने दुरुस्त होने के मुतअ़ल्लिक़ उलटे सीधे दलाइल क़ाइम करेगा।

याद रखिये! हम में से कोई भी "शैत़ान प्रूफ़" नहीं है, इस लिये समझाने का अन्दाज़ ऐसा हो कि जिस से सामने वाले में ज़िद पैदा न हो और शैत़ान उस की इस्लाह़ को उस की नज़र में बे इ़ज़्ज़ती बना कर न पेश कर सके, मसलन अगर उस में कोई अच्छी बात है या उस की गुफ़्तगू में कोई अच्छी चीज़ है तो पहले इस ह़वाले से जाइज़ अन्दाज़ में उस की कुछ ता'रीफ़ कर ली जाए, फिर उस की भूल की त़रफ़ इशारा कर दिया जाए, फिर कह दिया जाए कि अगर मेरी ग़लत़ फ़हमी है तो हाथ जोड़ कर मुआ़फ़ी मांगता हूं, अब तो सोशल मीडिया का दौर है, वॉट्सअप के ज़रीए़ हाथ जुड़ा हुवा (या'नी मुआ़फ़ी मांगने वाला) स्टीकर भी भेज दिया जाए, अल ग़रज़ ऐसा अन्दाज़ हरगिज़ न इख़्तियार किया जाए कि जिस से अगले में ज़िद पैदा हो और उसे ग़ुस्सा आए। समझाने के लिये

ह़कीमाना, प्यार, मह़ब्बत और नरमी वाला अन्दाज़ हो तो जिसे समझाया गया वोह सुधरने की सोचता है और उसे अपनी इस्लाह़ का कोई न कोई पहलू मिल भी जाता है।

कुछ लोग ऐसे भी होते हैं कि उन्हें जिस की इस्लाह़ करनी होती है उस का नम्बर उन के पास नहीं होता तो फिर वोह वीडियो या ऑडियो बना कर या फिर पोस्ट तय्यार कर के सोशल मीडिया पर इस पैग़ाम के साथ छोड़ देते हैं कि हमारे पास फ़ुलां का नम्बर नहीं है लिहाज़ा उस के साथ जिस का राबित़ा हो वोह हमारा येह पैग़ाम उसे पहुंचा दे, ऐसा नहीं करना चाहिये, सामने वाले को लाखों में रुस्वा और बे इ़ज़्ज़त कर के आप बोल रहे हैं कि उस को बोल दो ऐसा न करे, उस ने अगर अपनी इस्लाह़ कर भी ली तो लाखों को कौन बताने जाएगा कि उस की इस्लाह़ हो गई है, येह भी हो सकता है कि आप जनाब की ग़लत़ फ़हमी हो, सामने वाले के पास आप की बात का जवाब भी हो सकता है, फिर आप पर वाजिब भी तो नहीं है कि लाखों को उस का पैग़ाम पहुंचा कर आप कहें कि सुधर जा! इस त़रह़ के अन्दाज़ से सामने वाले की रुस्वाई होती है, उस के दिल में बुग़्ज़ पैदा हो सकता है, अगर उस ने अपनी ग़लती की इस्लाह़ कर भी ली तब भी शायद वोह आप से बदज़न ही हो।

अपने से बड़ा अगर कोई ना जाइज़ काम या कलाम कर रहा है और आप को पता है कि येह बात फ़ुलां किताब में इस इस त़रह़ लिखी हुई है और आप को ज़न्ने ग़ालिब है कि मैं समझाऊंगा तो येह मान जाएगा तो अब समझाना वाजिब है, और अन्दाज़ इस त़रह़ भी रखा जा सकता है कि वोह किताब खोल कर उस को दिखा दी जाए और प्यार मह़ब्बत के साथ येह कहा जाए कि ज़रा मुझे समझाइये कि येह क्या लिखा है?

अगर वोह समझदार होगा तो खुद ही समझ जाएगा। बहर ह़ाल ग़लती छोटा भी बताए और हो ग़लती, तो बड़ों को भी बड़ा दिल रख कर मान लेना चाहिये कि इसी में दुन्या व आख़िरत की भलाई है। **अल्लाह** पाक हमें अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ करने का जज़्बा अ़ता फ़रमाए।[1] اٰمین بجاہِ خاتَمِ النّبیّین صلی اللہ علیہ والہٖ وسلم (माहनामा फ़ैज़ाने मदीना, जून 2021 ई.)

अनमोल दौलत

अल्लाह के आख़िरी नबी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स में तीन बातें होंगी वोह ईमान की ह़लावत (या'नी मिठास) पा लेगा : ﴾1﴿ सब से बढ़ कर **अल्लाह** और उस के रसूल से मह़ब्बत करता हो ﴾2﴿ **अल्लाह** करीम ही के लिये किसी से मह़ब्बत करे ﴾3﴿ जिस त़रह़ आग में डाले जाने को बुरा जानता है उसी त़रह़ कुफ़्र की त़रफ़ लौटने को बुरा जाने। (بخاری، 1/17، حدیث:16) ह़ज़रते अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाया करते थे : **अल्लाह** पाक की क़सम ! जिसे अपने बुरे ख़ातिमे का ख़ौफ़ नहीं होता उस का ख़ातिमा बुरा होता है। (قوت القلوب، 2/228) काश ! हम सब को ईमान की सलामती की ह़क़ीक़ी सोच नसीब हो जाए, सद करोड़ काश ! हर वक़्त बुरे ख़ातिमे के ख़ौफ़ से दिल घबराता रहे, दिन में बार बार तौबा व इस्तिग़फ़ार का सिलसिला रहे। **अल्लाह** पाक के दरबारे करम बार से ईमान की ह़िफ़ाज़त की भीक मांगने की रट जारी रहे। जिस त़रह़ दुन्यवी दौलत की ह़िफ़ाज़त के मुआ़मले में ग़फ़्लत उस के ज़ियाअ़ (या'नी ज़ाएअ़ होने) का सबब बन सकती है इसी त़रह़ बल्कि

1... येह मज़्मून 27 फ़रवरी 2021 ई. को होने वाले मदनी मुज़ाकरे की मदद से तय्यार कर के अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ से मज़ीद मश्वरे ले कर पेश किया जा रहा है।

इस से भी ज़ियादा नाज़ुक मुआ़मला ईमान का है।

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का इर्शाद है : उ़लमाए किराम फ़रमाते हैं : जिस को सल्बे ईमान (या'नी ईमान छिन जाने) का ख़ौफ़ न हो मरते वक़्त उस का ईमान सल्ब (या'नी ज़ाएअ़) हो जाने का अन्देशा है। (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 495)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! दौलत की ह़िफ़ाज़त की जितनी फ़िक्र होती है उस से कहीं ज़ियादा ईमान की ह़िफ़ाज़त की फ़िक्र करना लाज़िम है क्यूं कि ईमान अनमोल दौलत है। अगर نَعُوْذُ بِاللهِ نَعُوْذُ بِاللهِ نَعُوْذُ بِاللهِ ख़ातिमा कुफ़्र पर हो गया तो हमेशा हमेशा के लिये जहन्नम में रहना पड़ेगा चाहे कितनी ही नमाज़ें पढ़ी थीं, तहज्जुद गुज़ार था, सदक़ा व ख़ैरात करने वाला था, अगर ख़ातिमा ईमान पर न हुवा तो फिर कुछ काम नहीं आएगा, ह़दीसे मुबारका में है : اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالْخَوَاتِيْم या'नी आ'माल का दारो मदार ख़ातिमे पर है। (بخاری، 4/274، حدیث:6607) इस ह़दीसे पाक के तह़्त शारेह़ीन फ़रमाते हैं कि हमेशा की सआ़दत मन्दी और बद बख़्ती की बुन्याद ब वक़्ते मौत इन्सान के आख़िरी अ़मल पर रखी गई है, क्यूं कि मौत के वक़्त अ़ज़ाब के फ़िरिश्तों को देखने से पहले बन्दा ईमान ले आए तो **अल्लाह** उस के कुफ़्र और कुफ़्रिय्या आ'माल को मिटा देता है इसी त़रह़ किसी मुसल्मान का आख़िरी अ़मल कुफ़्र पर हो तो उस के आ'माल बरबाद कर देता है। (عمدۃ القاری، 15/565، شرح البخاری لابن بطال، 10/306 ملخصاً)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! फ़ी ज़माना ह़ालात बड़े नाज़ुक हैं, त़रह़ त़रह़ के फ़ितने रोज़ रोज़ सामने आ रहे हैं। बुरे ख़ातिमे का ख़ौफ़ और ईमान की ह़िफ़ाज़त का जज़्बा बढ़ाने के लिये अच्छे माह़ोल और अच्छी

सोह़बत को अपनाइये, उ़लमाए अहले सुन्नत बिल ख़ुसूस आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की किताबें पढ़ना अपना मा'मूल बना लीजिये ।[1]

ख़ुदाया बुरे ख़ातिमे से बचाना पढ़ूं कलिमा जब निकले दम या इलाही

(माहनामा फ़ैज़ाने मदीना, मुह़र्रमुल ह़राम, 1441)

गालियां देने के नुक़्सानात

कहते हैं कि एक लोहार की बन्द दुकान में एक सांप घुस गया, उस का जिस्म वहां पड़ी एक आरी से टकरा कर हलका सा ज़ख़्मी हो गया, उस सांप ने पलट कर पूरी क़ुव्वत से आरी को डसा जिस के सबब उस का मुंह भी ज़ख़्मी हो गया, उस ने ग़ुस्से में आ कर ख़ुद को आरी के इर्द गिर्द लपेट लिया और अपना दुश्मन समझ कर उसे दबाने लगा, जिस की वज्ह से वोह ख़ुद ही मर गया। **ऐ आ़शिक़ाने रसूल !** उस बे वुक़ूफ़ सांप की त़रह़ ग़ुसीले (या'नी ग़ुस्से वाले) अफ़राद भी बे वुक़ूफ़ाना अन्दाज़ अपनाते, दूसरों को तक्लीफ़ देते और नुक़्सान पहुंचाने की कोशिश करते हैं। ज़रा ज़रा सी बात पर गाली पर गाली दे रहे होते हैं, कई लोग तो इस क़दर गालियों की दलदल में धंसे होते हैं कि हर चीज़ मसलन गधे, घोड़े, बकरे वग़ैरा जानवरों को भी गालियां दे रहे होते हैं, दीवार से टकरा गए तो उसे गाली, दरवाज़ा न खुले तो उसे गाली, गाड़ी स्टार्ट न हो तो उसे गाली, कॉल न लगे तो नेटवर्क को गाली, अल ग़रज़ हर चीज़ ही को अपनी गालियों का निशाना बना रहे होते हैं। बात बात पर ग़ुस्से हो कर गालियां देने वाला शख़्स उस बे वुक़ूफ़ सांप की त़रह़ इ़ज़्ज़त के ह़वाले से

1... येह मज़्मून मुख़्तलिफ़ मदनी मुज़ाकरों वग़ैरा की मदद से तय्यार कर के अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को चेक करवाने के बा'द पेश किया गया है।

अपनी मौत आप ही मर जाता है।

याद रखिये ! किसी मुसल्मान को गाली देना, उस की इ़ज़्ज़त उछालना गुनाह का काम है। ﴾1﴿ **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : सूद 70 गुनाहों का मज्मूआ़ है और उन में सब से कम येह है कि कोई शख़्स अपनी मां से बदकारी करे और सूद से बढ़ कर गुनाह मुसल्मान की बे इ़ज़्ज़ती करना है। (موسوعۃ ابن ابی الدنیا، 7/124، حدیث:173) ﴾2﴿ गालियां देने वाला शख़्स अगर सेठ है तो उस के मुलाज़िम, शौहर है तो उस की बीवी, उस्ताद है तो उस के शागिर्द उस से तंग रहते हैं, अगर इ़ज़्ज़त भी करते हैं तो सिर्फ़ अपने मक़ासिद के हुसूल के लिये या फिर उस के शर से बचने के लिये, और जिस की इ़ज़्ज़त उस के शर से बचने के लिये की जाए ह़दीसे पाक में उसे बद तरीन आदमी कहा गया है। (देखिये : 6131 :حدیث، 4/134، بخاری) ﴾3﴿ गालियां देने वाला बहुत ही बुरा शख़्स होता है जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में है कि "سَبَابُ الْمُسْلِمِ فُسُوقٌ" या'नी किसी मुसल्मान से गाली गलोच करना फ़िस्क़ है। (4814:حدیث، 2/190، مشکاۃ المصابیح) ﴾4﴿ झगड़े के वक़्त गाली बकने की आ़दत को मुनाफ़क़त की निशानियों में से एक निशानी कहा गया है। (देखिये : 34:حدیث، 1/25، بخاری) लिहाज़ा गालियां बकने वाला एक त़रह़ से ख़ुद को मुनाफ़िक़ों की लिस्ट में शामिल करने की कोशिश कर रहा होता है।

याद रखिये ! मुसल्मान को गाली देना और उस का दिल दुखाना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है, आज ही सच्ची तौबा करने के साथ साथ हर उस मुसल्मान से भी मुआ़फ़ी मांग लीजिये जिसे गाली

दी है या नाह़क़ दिल दुखाया है, ताकि दुन्या व आख़िरत की रुस्वाइयों से बच सकें। **अल्लाह** करीम हमें अपनी ज़बान का अच्छा इस्ति'माल करने और उसे गाली गलोच से बचा कर रखने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।[1]

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم (माहनामा फ़ैज़ाने मदीना, जुमादल ऊला 1442)

अपनी औलाद को दीन सिखाइये !

आज कल अक्सर मुसल्मान अपनी औलाद को सिर्फ़ो सिर्फ़ दुन्यावी ता'लीम दिलवाते और इसी के लिये ख़ूब कोशिश करते हुए नज़र आते हैं, उन्हें महंगे से महंगे स्कूलों में पढ़ाते और हज़ारों रुपै की ट्यूशन क्लासिज़ का उन के लिये एहतिमाम करते हैं। इस के बर अ़क्स उन का अपनी औलाद की दीनी ता'लीमो तरबियत के मुआ़मले में ग़फ़्लत का येह आ़लम होता है कि अक्सरिय्यत को देख कर भी क़ुरआने करीम दुरुस्त पढ़ना नहीं आता, यहां तक कि मैं ने तो कई ऐसे लोग भी देखे हैं जिन के बच्चे इंग्लिश तो अच्छी बोल रहे होते हैं मगर उन्हें कलिमा दुरुस्त पढ़ना नहीं आता। यूंही आ़म त़ौर पर उन्हें उन अ़क़ाइद का इ़ल्म नहीं होता जिन पर मुसल्मान के दीनो ईमान और उख़्रवी नजात का दारो मदार है, दुन्यवी ता'लीम की आ'ला तरीन डिग्रियां ह़ासिल करने के बा वजूद उन्हें नमाज़, रोज़ा, ह़ज व ज़कात वग़ैरा फ़र्ज़ इबादात से मुतअ़ल्लिक़ बुन्यादी और ज़रूरी बातों का कोई इ़ल्म नहीं होता, वुज़ू व ग़ुस्ल का सह़ीह़ त़रीक़ा, नमाज़ के अरकान या नमाज़े जनाज़ा की दुआ़एं तो शायद ही सुना पाएं, उ़मूमन दीन न सीखने और सिर्फ़ दुन्यावी ता'लीम ह़ासिल करने वाली औलाद आज कल अपने वालिदैन को ज़ियादा सताती और उन के

1... येह मज़्मून 13 जुल क़ा'दतिल ह़राम 1441 हि. के मदनी मुज़ाकरे की मदद से तय्यार कर के अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से मज़ीद मश्वरे ले कर पेश किया जा रहा है।

अरमानों का गला घोंटती नज़र आती है, अपने बूढ़े वालिदैन को ओल्ड हाउस पहुंचाने वाली औलाद भी आ़म त़ौर पर दुन्यावी ता'लीम याफ़्ता ही होती है, दीने इस्लाम से مَعَاذَاللہ बेज़ार और इस के बुन्यादी अह़काम पर त़रह़ त़रह़ के ए'तिराज़ात करने वाले अफ़्राद भी सिर्फ़ दुन्यवी उ़लूमो फ़ुनून में महारत रखने वाले ही नज़र आते हैं।

अब तक जितनी भी ख़ुदकुशियां हुई हैं उम्मीद है उन में कोई एक भी इ़ल्मे दीन का आ़लिम नहीं मिलेगा और **अल्लाह** पाक ने चाहा तो आयिन्दा भी ऐसे मुबारक अफ़्राद के बारे में आप ऐसा नहीं सुनेंगे, अलबत्ता अब तक ख़ुदकुशी करने वालों में एक बड़ी ता'दाद दुन्यावी ता'लीम ह़ासिल किये हुए अफ़्राद की सामने आई है। हमारी दुन्या व आख़िरत की भलाई इसी में है कि अपनी औलाद को दीन ज़रूर सिखाएं, अगर दुन्यावी ता'लीम दिलवानी भी है तो ज़रूरी दीनी इ़ल्म सिखाने के बा'द भी अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ और शरीअ़त के बताए हुए उसूलों पर अ़मल करते हुए उन्हें दुन्यावी ता'लीम दिलवाएं।

याद रखिये ! क़ियामत के दिन जिस त़रह़ दीगर ने'मतों के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल होगा यूं ही औलाद भी एक ने'मत है इस के मुतअ़ल्लिक़ भी हम से सुवाल होगा। अपनी औलाद की दुरुस्त इस्लामी तरबियत कर के दुन्या में ही इस सुवाल का जवाब तय्यार कर लीजिये। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا ने एक शख़्स से फ़रमाया : "अपने बच्चे की अच्छी तरबियत करो क्यूं कि तुम से तुम्हारी औलाद के बारे में पूछा जाएगा कि तुम ने इस की कैसी तरबियत की और तुम ने इसे क्या सिखाया ?" (شعب الایمان، 6/400، حدیث:8662) लिहाज़ा अपनी औलाद को वोह कुछ सिखाइये कि जिस से क़ियामत के दिन आप को रुस्वाई का

सामना न करना पड़े। **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "किसी बाप ने अपने बच्चे को ऐसा अ़त़िय्या नहीं दिया जो अच्छे अदब से बेहतर हो।" (ترمذی، 3/383، حدیث:1959)

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "अच्छे अदब से मुराद बच्चे को दीनदार, मुत्तक़ी, परहेज़ गार बनाना है। औलाद के लिये इस से अच्छा अ़त़िय्या क्या हो सकता है कि येह चीज़ दीनो दुन्या में काम आती है। मां बाप को चाहिये कि औलाद को सिर्फ़ मालदार बना कर दुन्या से न जाएं बल्कि उन्हें दीनदार बना कर जाएं जो ख़ुद उन्हें भी क़ब्र में काम आए कि ज़िन्दा औलाद की नेकियों का सवाब मुर्दा को क़ब्र में मिलता है।" (मिरआतुल मनाजीह, 6/420) **अल्लाह** करीम अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ हमें अपनी औलाद को दीन सिखाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

(माहनामा फ़ैज़ाने मदीना, ज़िल ह़िज्जतिल ह़राम 1441)

सुल्ह़ में भलाई है

रमज़ानुल मुबारक 1441 हि. की 25वीं रात नमाज़े तरावीह़ के बा'द होने वाले मदनी मुज़ाकरे में एक सुवाल किया गया कि हमारे वालिद साह़िब का हमारे चचा और दीगर चन्द रिश्तेदारों से झगड़ा है तो इस सूरत में हमें क्या करना चाहिये ? क्या हम भी उन रिश्तेदारों से तअ़ल्लुक़ तोड़ कर रखें या हमें अपने रिश्ते के मुत़ाबिक़ उन से बना कर रखनी चाहिये ?

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इर्शाद फ़रमाया : वालिदैन के झगड़ों में औलाद को नहीं पड़ना चाहिये, चचा से भतीजे को सिलए रेह़मी तो करनी ही होगी, क़त़्ए रेह़मी ह़राम है, अगर

दोनों भाई आपस में नाराज़ हैं और इस वज्ह से बेटा अपने चचा से नहीं मिलता तो येह नहीं होना चाहिये, लड़ाई चाहे वालिद साहिब की अपने भाई से हो या वालिदा की अपनी बहन से, औलाद अपने वालिदैन की लड़ाई की वज्ह से सिलए रेह्मी करने से ख़ुद को महरूम न करे, नीज़ भाई बहन को, भाई भाई को, बहन बहन को आपस में नाराज़ियां रखनी नहीं चाहिएं बल्कि हिम्मत कर के कुछ आगे बढ़ कर मेल मिलाप कर लेना चाहिये।

ह़िकायत : हमारे बड़ों के आपस में कुछ मसाइल हुए होंगे जिस की वज्ह से मेरी (या'नी अमीरे अहले सुन्नत की) ख़ाला के हां हम लोगों का आना जाना बन्द था और न ही वोह आती थीं। शहीद मस्जिद के पास ख़ाला का घर था और मैं उसी मस्जिद में इमामत करता था। **अल्लाह** के करम से मुझे तौफ़ीक़ मिल गई और मैं हिम्मत कर के ख़ाला के घर चला गया (मेरा तो वैसे भी उन से कोई झगड़ा नहीं था), मुझे देख कर वोह लोग ह़ैरान हो गए और कहने लगे : तुम ? मैं ने कहा : "हां ! मैं सुल्ह़ करने आया हूं मुआ़फ़ कर दो !" ख़ालू से मिला तो उन्हों ने कहा कि तुम इतने बड़े आदमी हो गए हो और हम से ख़ुद मिलने आए हो ! (येह उन दिनों की बात है जब दा'वते इस्लामी को बने हुए थोड़ा अ़र्सा हुवा था लेकिन दा'वते इस्लामी की वज्ह से मेरा नाम हो गया था), यूं उन से सुल्ह़ कर के मैं घर आया और अपनी बहन वग़ैरा को समझा बुझा कर कहा कि मैं राह हमवार कर के आया हूं लिहाज़ा तुम लोग ख़ाला के हां चले जाओ और اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! वोह लोग भी उन के हां चले गए और **अल्लाह** पाक के करम से ख़ाला के हां हमारे आने जाने का सिल्सिला शुरूअ़ हो गया।

लिहाज़ा जिन की भी आपस में नाराज़गियां हैं उन में से कोई एक

पार्टी हिम्मत करे तो तरकीब बन सकती है, अलबत्ता अगर पुरानी बातें याद दिलाएंगे कि "तुम ने येह येह बोला था, यूं यूं किया था, मैं फिर भी चल कर आया हूं" तो हो सकता है वोह बोलें कि दरवाज़ा अभी तक हम ने भेड़ा (या'नी बन्द) नहीं (किया) है तू निकल जा, तू आया ही क्यूं है ? लिहाज़ा जो सुल्ह़ करने जाए उस के अन्दर झुकाव होना चाहिये क्यूं कि सुल्ह़ के दरवाज़े की चौखट थोड़ी नीचे है, अगर झुक कर जाएंगे तो दाख़िला मिल जाएगा, अकड़ते हुए जाएंगे तो सर टकरा जाएगा और सुल्ह़ होगी नहीं।

बहर ह़ाल जो आ़जिज़ी करेगा, झुकेगा वोही काम्याब होगा। **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : مَنْ تَوَاضَعَ لِلّٰهِ رَفَعَهُ اللّٰه या'नी जिस ने **अल्लाह** की रिज़ा के लिये आ़जिज़ी की **अल्लाह** पाक उसे बुलन्दी अ़त़ा फ़रमाता है। (شعب الایمان، 6/276، حدیث:8140) लिहाज़ा सब को सुल्ह़ करनी चाहिये, इस Topic के ह़वाले से मक्तबतुल मदीना का एक बहुत प्यारा रिसाला है "हाथों हाथ फूफी से सुल्ह़ कर ली" इस रिसाले को पढ़ कर **अल्लाह** पाक ने चाहा तो आप का ज़ेह्न बन जाएगा कि झगड़ा नहीं सुल्ह़ होनी चाहिये। **अल्लाह** करीम हमें आपस में सुल्ह़ के साथ रहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم (माहनामा फ़ैज़ाने मदीना, मुह़र्रमुल ह़राम, 1442)

फ़ुज़ूल सुवालात के आ़दियों के लिये पैग़ाम

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! मैं बत़ौरे आ़दत बिला ज़रूरत किसी से येह नहीं पूछता कि तुम्हारे बच्चे कितने हैं ? तुम क्या काम करते हो ? तुम्हारी आमदनी कितनी है ? वग़ैरा। बसा अवक़ात सामने वाला इस त़रह़ के सुवालात पसन्द भी नहीं करता, क्यूं कि अगर तनख़्वाह कम हुई तो बताते हुए शर्म

आएगी और अगर बता भी दी तो हो सकता है पूछने वाला बोल पड़े कि सिर्फ़ इतनी सी तनख़्वाह ! तुम्हारी तो इतनी इतनी ता'लीम और इतना इतना तजरिबा है वग़ैरा वग़ैरा, और अगर उस की तनख़्वाह ज़ियादा हुई तो हो सकता है कि नज़र लग जाने के ख़ौफ़ से बताते हुए झिजके (यक़ीनन नज़र का लगना ह़क़ है कि ह़दीसों से साबित है) ।

बा'ज़ लोग ख़्वाह म ख़्वाह बेटे बेटियों की ता'दाद, उन की उ़म्रों, मंग्नियों और शादियों वग़ैरा के मुतअ़ल्लिक़ फ़ुज़ूल सुवालात कर के दूसरों को (BORE) करते हैं अगर किसी के ग़ैर शादी शुदा बेटे या बेटी का मा'लूम करने में काम्याब हो जाएं तो मज़ीद पूछेंगे : क्या मस्अला है ? इस की शादी क्यूं नहीं करवा रहे ? अब तो काफ़ी उ़म्र हो गई है, इस का कुछ करो । किसी की शादी को अगर चन्द महीने गुज़र चुके हों तो पूछेंगे कि "ख़ुश ख़बरी" है या नहीं ? इस त़रह़ की बातों में औ़रतें भी किसी से पीछे नहीं रहतीं । **अल्लाह** करीम उन को भी अ़क़्ले सलीम अ़त़ा फ़रमाए । किसी ने बेटी की शादी की तो सुवाल होगा : जहेज़ कितना दिया ? क्या क्या दिया और हां सोना (GOLD) कितना दिया ? किसी के घर जाएंगे तो बिन मांगा मश्वरा देते हुए इर्शाद होगा : येह चीज़ तुम्हें यहां के बजाए वहां रखनी चाहिये थी, यूं ही दरवाज़ों और खिड़कियों के बारे में कहेंगे कि येह अगर यूं कर लेते तो और बेहतर हो जाता, बा'ज़ अवक़ात तो मेज़बान को दिल आज़ार बातें भी बोल दी जाती होंगी, मसलन : आप के घर में सफ़ाई का ख़याल रखने की ज़रूरत है । इसी त़रह़ कारपेट, दीवारों और वॉशरूम वग़ैरा की ख़ामियां भी बयान करते होंगे । जो फ़ुज़ूल सुवालात से बचा रहता है, उम्मीद है वोह टेन्शन फ़्री रहने के साथ साथ दूसरों के दिल दुखाने और उसे झूट के गुनाह में फंसाने की आफ़तों से भी

बचा रहे। **अल्लाह** करीम हम सब को फ़ुज़ूल बातों, फ़ुज़ूल सुवालों और दीगर फ़ुज़ूल कामों से बचने और दूसरों को बचाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم[1]

(माहनामा फ़ैज़ाने मदीना, जुमादस्सानी 1440)

नमाज़ी बढ़ाने के नुस्ख़े

गुनाहों का सैलाब ज़ोरों पर है, लोग गुनाहों के मक़ामात के क़रीब और इल्मे दीन सिखाने वाले मक़ामात और मसाजिद से दूर होते चले जा रहे हैं, पहले मस्जिद कच्ची (या'नी मिट्टी की दीवारों वाली) भी होती थी तो भी नमाज़ी उ़मूमन पक्के होते थे और अब वोह दौर आया कि मस्जिदें तो सिमेन्ट, सरिया और मार्बल वग़ैरा से पक्की बनी होती हैं लेकिन नमाज़ी कच्चे दिखाई देते हैं, मगर जिसे **अल्लाह** बचाए। फ़ितनों से भरे इस दौर में बहुत सारे मुसल्मान तो वैसे ही मसाजिद में नमाज़ के लिये नहीं आते और जो आते हैं उन्हें मसाजिद में ज़रूरिय्यात और सहूलिय्यात (Facilities) उ़मूमन कम या ग़ैर मे'यारी मिलती हैं जिस की वज्ह से नफ़्सो शैत़ान को उन्हें मस्जिद से भगाना आसान हो जाता है। लिहाज़ा मसाजिद की ख़िदमत की सआ़दत पाने वाले आ़शिक़ाने रसूल से गुज़ारिश है कि मौला करीम आप की काविशों को क़बूल फ़रमाए, नमाज़ियों को मज़ीद आसानियां फ़राहम कीजिये, اِنْ شَآءَاللہ नमाज़ी बढ़ेंगे और बा जमाअ़त नमाज़ के पाबन्द बनेंगे, यूं आप के लिये सवाबे जारिया में इज़ाफ़ा हो जाएगा। नमाज़ी बढ़ाने के लिये आ़शिक़ाने रसूल के दारुल इफ़्ता से शरई राहनुमाई लेने के बा'द ही इन नुस्ख़ों पर अ़मल किया जाए।

1... येह मज़्मून 24 रमज़ानुल मुबारक 1441 हि. के मदनी मुज़ाकरे की मदद से तय्यार कर के अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ को चेक करवाने के बा'द पेश किया गया है।

❀ दुन्या का मौसिम अ़जीबो ग़रीब करवटें ले रहा है जिसे ग्लोबल वॉर्मिंग (Global warming) कहा जा रहा है, जैसी गरमी अब पड़ रही है पहले नहीं होती थी, लिहाज़ा जिन के यहां मुम्किन हो वोह अपनी मस्जिद में ''ए.सी.'' लगवा लें ❀ ठन्डे मौसिम में फ़र्श पर ऐसी मोटी दरी या क़दरे पतला कारपेट बिछाएं जिस पर सज्दे में पेशानी ब आसानी जम सके ❀ वुज़ूख़ाने के नल वग़ैरा को दुरुस्त रखें, हाथ धोने के लिये साबुन वग़ैरा का भी एहतिमाम रखिये ❀ वुज़ूख़ाने में खारे के बजाए ''मीठा पानी'' हो ❀ मसाजिद के इस्तिन्जा ख़ानों (Toilets) को बनावट और सफ़ाई के ए'तिबार से बेहतर करवा लिया जाए और जहां नमाज़ियों की आमदो रफ़्त ज़ियादा हो वहां ''इस्तिन्जा ख़ानों की सफ़ाई'' के लिये ख़ास तौ़र पर किसी शख़्स को मुक़र्रर किया जाए जो लोगों का रश ख़त्म हो जाने के बा'द सफ़ाई सुथराई करता रहे ❀ कई लोग डब्लयूसी के ज़रीए इस्तिन्जा नहीं कर पाते बल्कि उन्हें ''कमोड'' की ह़ाजत होती है, लिहाज़ा ज़रूरत के मुत़ाबिक़ हर मस्जिद में कम अज़ कम एक कुशादा और बड़े साइज़ का कमोड होना चाहिये, उस का सूराख़ भी पिछली साइड पर हो, और दरवाज़े के बाहर इस की निशानी भी लगी हो, ताला लगाने के बजाए उसे खुला रखिये। ❀ सुना है कि बाहर ममालिक में ''मसाजिद के बाहर नमाज़ियों के बैठने के लिये एक मख़्सूस जगह'' बनी होती और कुर्सियां (Chairs) रखी होती हैं, जहां उ़मूमन बड़ी उ़म्र के नमाज़ी ह़ज़रात (जिन के लिये बार बार घर जाना और आना मुश्किल होता है, वोह) अ़स्र व मग़रिब के बा'द बैठे अगली नमाज़ का इन्तिज़ार करते हैं, बल्कि कहीं तो ''फ़्रीज'' का भी इन्तिज़ाम होता है, उस में

नमाज़ियों के लिये पानी वग़ैरा रखा होता है, येह अच्छा अन्दाज़ है जहां मुम्किन हो किसी आ़शिक़े रसूल मुफ़्ती साहि़ब से इजाज़त ले कर इसे भी अपनाया जाए ❀ बिल ख़ुसूस सर्दियों में इ़शा की नमाज़ के बा'द नमाज़ियों के लिये "चाय" का इन्तिज़ाम किया जा सकता है मगर इस के लिये अलग से चन्दा किया जाए ❀ बा'ज़ मसाजिद में शर्ई त़ौर पर मा'ज़ूर नमाज़ियों के लिये कुर्सियों का एहतिमाम होता है लेकिन कई लोग उन कुर्सियों पर बैठ नहीं पाते, बा'ज़ अवक़ात कुरसी की सख़्ती बैठने वाले को काफ़ी परेशान करती है, जिस से बिल ख़ुसूस बड़ी उ़म्र के नमाज़ी आज़्माइश का शिकार होते हैं, लिहाज़ा सस्ती और ग़ैर मे'यारी कुर्सियों के बजाए "अच्छे गद्दों वाली कुर्सियां" रखी जाएं ❀ जहां जहां दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त होते हैं वहां कुछ ज़ियादा ता'दाद में "आराम देह कुर्सियां" रखी जाएं, मगर जो नीचे बैठ सकता हो उसे नीचे ही बैठना चाहिये। ❀ गाउं दीहातों वग़ैरा में जहां जहां दा'वते इस्लामी के क़ाफ़िले सफ़र करते हैं अगर वहां वॉशरूम या वुज़ूख़ाने का मुनासिब बन्दो बस्त न हो तो मुम्किना सूरत में क़ाफ़िले वाले इस्लामी भाई आपस में रक़म मिला कर येह काम करवा लें, इस से वहां के नमाज़ियों के साथ साथ आयिन्दा क़ाफ़िले वालों के लिये भी आसानी हो जाएगी (**मश्वरा :** जब भी वुज़ूख़ाना बनाना हो तो उसे बेहतर अन्दाज़ में बनाने के लिये मक्तबतुल मदीना के रिसाले "वुज़ू का त़रीक़ा" के बेक टाइटल पर उस का नक़्शा देख लीजिये) ❀ याद रखिये ! सहूलिय्यात देने के ज़रीए अगर कोई नमाज़ी बनता है तो येह घाटे का सौदा नहीं बल्कि आख़िरत में नफ़्अ़ ही नफ़्अ़ है ❀ इस्लामी बहनों के जहां जहां इज्तिमाआ़त

और रिहाइशी कोर्स होते हैं वहां भी ह़स्बे मौक़अ़ मुशावरतों (Counselling) के साथ "मज़्कूरा सहूलिय्यात" मुहय्या की जाएं। **अल्लाह** करे कि हमारा बच्चा बच्चा **अल्लाह** पाक का नाम लेने वाला बन जाए, हमारी मस्जिदें आबाद हो जाएं, मुसल्मान नमाज़ी बन जाएं और सुन्नतों पर अ़मल को अपना मा'मूल बना लें।[1] اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

"मस्जिद भरो तह़रीक मस्जिद बनाओ तह़रीक"

मस्जिदें आबाद करने की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم :

﴿1﴾ बेशक **अल्लाह** पाक के घरों को आबाद करने वाले ही **अल्लाह** वाले हैं। (معجم اوسط، 2/58، حدیث:2502) ﴿2﴾ जो मस्जिद से मह़ब्बत करता है **अल्लाह** पाक उसे अपना मह़बूब (या'नी प्यारा) बना लेता है। (معجم اوسط، 4/400، حدیث:6383) ﴿3﴾ जब कोई बन्दा ज़िक्र या नमाज़ के लिये मस्जिद को ठिकाना बना लेता है तो **अल्लाह** पाक उस की त़रफ़ रह़मत की नज़र फ़रमाता है, जैसा कि जब कोई ग़ाइब आता है तो उस के घर वाले उस से ख़ुश होते हैं। (ابن ماجہ، 1/438، حدیث:800)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ! आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक, "दा'वते इस्लामी" नेकी की दा'वत आ़म करने के लिये मसाजिद आबाद करने का भी अ़ज़्म रखती है, इसी मक़्सद के लिये इन्फ़िरादी और इज्तिमाई कोशिशों के ज़रीए़ आ़शिक़ाने रसूल को नमाज़े बा जमाअ़त के लिये मसाजिद का रुख़ करने की तरग़ीब दी जाती है। मुख़्तलिफ़ मसाजिद में बा'द नमाज़े फ़ज्र मदनी ह़ल्क़ा और किसी नमाज़ के बा'द दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत की तरकीब

1... येह मज़्मून 8 मुह़र्रमुल ह़राम 1441 हि. के मदनी मुज़ाकरे से तय्यार कर के अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ को चेक करवाने के बा'द पेश किया जा रहा है।

होती है, इस के इलावा हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त और मुख़्तलिफ़ मवाक़ेअ़ पर होने वाले तरबियती इज्तिमाआ़त भी मसाजिद में होते हैं, मदनी मुज़ाकरा भी मस्जिद (या'नी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना) में होता है, सुन्नतों की तरबियत के लिये दुन्या भर में सफ़र करने वाले आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िले भी उ़मूमन मसाजिद ही में ठहरते हैं, जो मसाजिद आबाद करने का एक बेहतरीन ज़रीआ़ हैं। हमारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मस्जिदें बनाने की तरग़ीब देते हुए इर्शाद फ़रमाया : ﴿1﴾ जो **अल्लाह** पाक के लिये मस्जिद बनाएगा **अल्लाह** पाक उस के लिये जन्नत में घर बनाएगा। (مسلم، ص1218، حدیث:7471) ﴿2﴾ मस्जिदें ता'मीर करो और उन्हें मह़फ़ूज़ बनाओ। (مصنف ابن ابی شیبہ، 1/344، حدیث:9)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! दा'वते इस्लामी जहां "मस्जिद भरो तह़रीक" है वहां "मस्जिद बनाओ तह़रीक" भी है, दा'वते इस्लामी की "मजलिस ख़ुद्दामुल मसाजिद" मसाजिद की ता'मीर, आबाद कारी और मस्जिद के अ़मले (Staff) के मुशाहरों (Salaries) के इन्तिज़ामात वग़ैरा के लिये कोशां है, اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! 2017 ई. में इन्डिया में 62 मसाजिद ता'मीर की गईं जब कि रवां (या'नी जारी साल) साल 2018 ई. में اِنْ شَآءَاللّٰه 170 मसाजिद बनाने का हदफ़ है जिन में से 40 मसाजिद का ता'मीराती काम जारी है जब कि मसाजिद बनाने के लिये 113 प्लॉट्स (Plots) ह़ासिल किये जा चुके हैं।

कर मस्जिदें आबाद तेरी क़ब्र हो आबाद फ़िरदौस अ़ता कर के ख़ुदा तुझ को करे शाद

अपनी आख़िरत संवारने के लिये आप भी मसाजिद की ता'मीर में ह़िस्सा लीजिये। मजलिसे ख़ुद्दामुल मसाजिद (दा'वते इस्लामी) से

राबिते़ के लिये मोबाइल नम्बर : 7817862611, वॉट्सअप : 7817862611 Email : khuddamulmasajidhind@gmail.com

(माहनामा फ़ैज़ाने मदीना, जुमादल उख़्रा 1439)

वुज़ूख़ाने के मदनी फूल

❀ वुज़ू से पहले बिस्मिल्लाह पढ़ना सुन्नत है। (बहारे शरीअ़त, 1/293) आज कल उ़मूमन अटैच बाथ (Attach Bath) बनाए जाते हैं, इस सूरत में अगर इस्तिन्जा से फ़राग़त के बा'द बाहर निकले बिग़ैर वहीं बेसिन पर वुज़ू करना हो तो वुज़ू की दुआ़एं वग़ैरा नहीं पढ़ सकते। ❀ इस्तिन्जा से फ़राग़त के बा'द अगर वुज़ू करना हो तो इस्तिन्जा ख़ाने से बाहर निकल आएं, इस्तिन्जा ख़ाने से बाहर निकलने की दुआ़ पढ़ें, अब वुज़ू से पहले की दुआ़एं पढ़ कर अन्दर दाख़िल हों और वुज़ू फ़रमाएं। ❀ W.C या कमोड (Commode) को स्लाइडिंग दरवाज़ा (Sliding Door) लगा कर अलग कर दिया जाए, सिर्फ़ पर्दे वग़ैरा लगाने से काम नहीं चलेगा। इस सूरत में इस्तिन्जा से फ़राग़त पा कर स्लाइडिंग दरवाज़ा बन्द कर के वुज़ू करते हुए दुआ़एं वग़ैरा पढ़ सकते हैं। ❀ इस के लिये बड़ा ह़म्माम (Wash Room) होना ज़रूरी नहीं बल्कि छोटे ह़म्माम में भी स्लाइडिंग दरवाज़ा लगा कर पार्टीशन (Partition) किया जा सकता है। ❀ मेरे घर का ह़म्माम भी छोटा सा है लेकिन उस में इसी अन्दाज़ में पार्टीशन कर के तरकीब बनाई हुई है, फ़ैज़ाने मदीना के मक्तब में भी वुज़ूख़ाना बनाया हुवा है। ❀ अफ़्सोस की बात है कि घर में दुन्या जहान की सहूलतें (Facilities) मुहय्या करने की कोशिश की जाती है लेकिन एक टोंटी का वुज़ूख़ाना नहीं बनाया जाता।

(ब तग़य्युरे क़लील)(माहनामा फ़ैज़ाने मदीना, जुमादल ऊला 1438)

नमाज़ के चन्द ज़रूरी मसाइल

ह़दीस शरीफ़ में है : जो शख़्स रुकूअ़ व सुजूद मुकम्मल नहीं करता नमाज़ उसे कहती है : "**अल्लाह** तुझे हलाक करे जिस त़रह़ तू ने मुझे ज़ाएअ़ किया, फिर उस नमाज़ को पुराने कपड़े की त़रह़ लपेट कर नमाज़ी के मुंह पर मार दिया जाता है।" (شعب الایمان، 3/144، حدیث:3140ملتقطا) नीज़ एक रिवायत में है : बद तरीन चोर वोह है जो नमाज़ में चोरी करे। अ़र्ज़ की गई : नमाज़ का चोर कौन है ? फ़रमाया : वोह जो रुकूअ़ व सुजूद मुकम्मल न करे। (مسند احمد، 8/386، حدیث:22705) आज कल नमाज़ में की जाने वाली उ़मूमी ग़लति़यों (Common Mistakes) में से कुछ को मद्दे नज़र रखते हुए चन्द मदनी फूल पेशे ख़िदमत हैं :

❀ रुकूअ़ में झुकने की कम अज़ कम ह़द येह है कि हाथ बढ़ाए तो घुटनों तक पहुंच जाए जब कि मुकम्मल रुकूअ़ येह है कि पीठ सीधी बिछा दे। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, 1/513 मफ़्हूमन) ❀ रुकूअ़ के लिये झुकना नमाज़ में फ़र्ज़ है और वहां कुछ ठहरना या'नी इ़त्मीनान से रुकूअ़ करना वाजिब। (मिरआतुल मनाजीह़, 2/75) किसी नर्म चीज़ मसलन घास, रूई, क़ालीन वग़ैरा पर सज्दा करने की सूरत में पेशानी और नाक की हड्डी को इतना दबाना ज़रूरी है कि दबाने से मज़ीद न दबे। अगर पेशानी इतनी न दबी तो नमाज़ ही न होगी जब कि नाक की हड्डी इतनी न दबी तो नमाज़ मक्रूहे तह़रीमी होगी और उसे लौटाना वाजिब होगा। (عالمگیری، 1/70) ❀ सज्दे में पाउं की एक उंगली का पेट ज़मीन पर लगना फ़र्ज़ है और हर पाउं की अक्सर उंग्लियों का पेट ज़मीन पर लगना वाजिब है। (फ़तावा रज़विय्या, 3/253 मुलख़्ख़सन) ❀ रुकूअ़ के बा'द सीधा खड़ा होना और दो सज्दों के

दरमियान सीधा बैठना वाजिब है नीज़ इस दौरान कम अज़ कम एक बार سُبْحٰنَ اللّٰه कहने की मिक़्दार ठहरना भी वाजिब है। (बहारे शरीअ़त, 1/518 मुलख़्ख़सन, नमाज़ के अह़काम, स. 218) ❀ एक रुक्न में तीन मरतबा खुजाने से नमाज़ टूट जाती है, या'नी एक बार खुजा कर हाथ हटाया फिर दूसरी बार खुजा कर हटाया अब तीसरी बार जैसे ही खुजाएगा नमाज़ टूट जाएगी और अगर एक बार हाथ रख कर चन्द बार ह़रकत दी तो एक ही मरतबा खुजाना कहा जाएगा। (बहारे शरीअ़त, 1/614, ह़िस्सा : 3 मुलख़्ख़सन) ❀ इमाम से पहले मुक़्तदी का रुकूअ़ व सुजूद वग़ैरा में चला जाना या उस से पहले सर उठाना (मक्रूहे तह़रीमी है) (बहारे शरीअ़त, 1/626, ह़िस्सा : 3) ❀ नमाज़ में चेहरा फेर कर इधर उधर देखना मक्रूहे तह़रीमी है। जब कि बिग़ैर चेहरा फेरे बिला ह़ाजत इधर उधर देखना मक्रूहे तन्ज़ीही है। (बहारे शरीअ़त, 1/626, ह़िस्सा : 3 मुलख़्ख़सन) (नमाज़ के मसाइल तफ़्सीलन सीखने के लिये बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 3 और "नमाज़ के अह़काम" का मुत़ालआ़ फ़रमाइये) (माहनामा फ़ैज़ाने मदीना, शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1439)

मो'तकिफ़ीन वग़ैरा के लिये मस्जिद के आदाब से मुतअ़ल्लिक़ अहम मदनी फूल

❀ मस्जिद को हर त़रह़ की बदबू से बचाइये ❀ मस्जिद में किसी क़िस्म का कूड़ा (या'नी कचरा) वग़ैरा हरगिज़ न फेंकिये बल्कि हो सके तो मस्जिद में नज़र आने वाले तिन्के और बालों के गुच्छे वग़ैरा उठा कर डालने के लिये अपनी जेब में एक शॉपर (छोटा लिफ़ाफ़ा) रख लीजिये ❀ **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मस्जिद से अज़िय्यत की चीज़ निकाले **अल्लाह** पाक जन्नत में उस के लिये एक घर बनाएगा।

(ابن ماجہ، 1/419، حدیث:757) ❀ अपने पसीने और मुंह की राल वग़ैरा की आलूदगी से मस्जिद के फ़र्श, दरी या कारपेट को बचाने के लिये मो'तकिफ़ सिर्फ़ अपनी ज़ाती चादर या चटाई पर सोए ❀ वुज़ूख़ाना फ़िनाए मस्जिद में होने की सूरत में तेल कंघी वहीं कीजिये और जो बाल वग़ैरा झड़ें उन्हें उठा लीजिये ❀ खाना फ़िनाए मस्जिद में वोह भी दस्तर ख़्वान वग़ैरा बिछा कर उस पर खाइये, नमाज़ की दरी पर हरगिज़ न खाइये ❀ दौराने ए'तिकाफ़ मस्जिद के अन्दर ज़रूरतन दुन्यवी बात करने की इजाज़त है, लेकिन इस में भी ज़रूरी है कि किसी नमाज़ी या सोने वाले को तश्वीश न हो, बिला ज़रूरत दुन्यवी बातचीत की इजाज़त नहीं ❀ **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "लोगों पर एक ज़माना ऐसा आएगा कि मसाजिद में दुन्या की बातें होंगी, तुम उन के साथ मत बैठो कि **अल्लाह** पाक को ऐसे लोगों की कोई ह़ाजत नहीं ।" (شعب الایمان، 3/86، حدیث:2962) ❀ मस्जिद में पुर सुकून, ख़ामोश और सन्जीदा रहिये, न ख़ुद हंसिये न दूसरों को हंसाइये, हां ! ज़रूरतन मुस्कुराने में ह़रज नहीं । ❀ मस्जिद की दीवार, फ़र्श, चटाई या दरी के ऊपर या नीचे थूकने, नाक सिनक्ने, नाक या कान से मैल निकाल कर लगाने वग़ैरा से बचिये ❀ आ'ज़ाए वुज़ू से वुज़ू के पानी के क़त़रे मस्जिद के फ़र्श पर गिराना ना जाइज़ व गुनाह है ❀ मस्जिद में दौड़ना या ज़ोर से क़दम रखना जिस से आवाज़ पैदा हो मन्अ़ है । मस्जिद में छींक, खांसी, डकार और जमाही वग़ैरा की आवाज़ को जितना हो सके ज़ब्त़ कीजिये ❀ मस्जिद के फ़र्श पर कोई भी चीज़ मसलन : टोपी, चादर, लकड़ी, छत्री, पंखा वग़ैरा आहिस्ता से रखिये, फेंकने से गुरेज़ कीजिये ❀

क़िब्ले की त़रफ़ पाउं फैलाना तो हर जगह मन्अ़ है, मस्जिद में किसी त़रफ़ न फैलाए कि दरबारे इलाही के आदाब के ख़िलाफ़ है ❀ भूक से कम खाने की आ़दत बनाइये कि डट कर खाने से बसा अवक़ात मुंह से बदबू आने का मरज़ हो जाता है और मुंह से बदबू आ रही हो तो मस्जिद का दाख़िला ह़राम होता है ❀ कच्ची मूली, कच्ची पियाज़, कच्चा लह्सन और हर वोह चीज़ जिस की बू ना पसन्द हो खाने से बचिये ❀ **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने पियाज़, लह्सन या गिन्दना (लह्सन से मिलती जुलती एक तरकारी) खाई वोह हमारी मस्जिद के क़रीब हरगिज़ न आए। (ابو داؤد، 3/506، حدیث:3827) ❀ मोबाइल फ़ोन का इस्ति'माल सिर्फ़ और सिर्फ़ ज़रूरतन कीजिये ❀ ग़ैर मो'तकिफ़ बिल उ़मूम जब कि मो'तकिफ़ बिल ख़ुसूस सोशल मीडिया के इस्ति'माल से परहेज़ करे ❀ मस्जिद में ना समझ बच्चों को मत लाइये।

करम अज़ पए मुस्त़फ़ा मेरे रब हो मुझे मस्जिदों का मुयस्सर अदब हो

(माख़ूज़ अज़ फ़ैज़ाने रमज़ान, स. 228 ता 250)

(माहनामा फ़ैज़ाने मदीना, रमज़ानुल मुबारक 1439)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

जो किसी को मस्जिद में ब आवाज़े बुलन्द गुमशुदा चीज़ ढूंडते सुने तो वोह कहे **:** لَارَدَّهَا اللهُ عَلَيْكَ فَاِنَّ الْمَسَاجِدَ لَمْ تُبْنَ لِهٰذَا या'नी **अल्लाह** वोह गुमशुदा शै तुझे न मिलाए क्यूं कि मस्जिदें इस काम के लिये नहीं बनाई गईं। (مسلم، ص224، حدیث:1260)

तहरीरे अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ

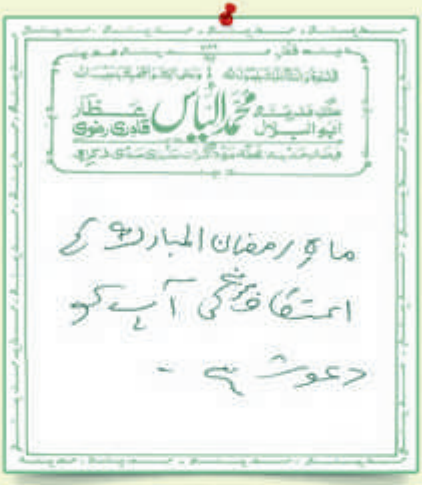

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की एक इस्लामी भाई को तहरीरी नेकी की दा'वत "माहे रमज़ानुल मुबारक के ए'तिकाफ़ करने की आप को दा'वत है।"